स्वतंत्राता संग्राम में हिंदी साहित्यिक पत्राकारिता का योग्दान

प्रो. श्रीमती पी. व्ही. गाडवी

हिन्दी विभागाध्यक्षा

एस.एस.आर्टस ॲन्ड टी. पी. सायन्स कॉलेज, संकेश्वर

मनुष्य अपने समाज के विषय में बहुत कुछ जानने को उत्सुक रहता है उसकी जिज्ञासुवृत्ति उसे और अधिक उत्सुक बना देती है। इस उत्सुकता को जानने का एकमात्र साधन पत्रकारिता है। पत्रकारिता का अपना महत्त्व है और यह महत्त्व किसी एक कारण से नहीं है। इससे मानव को कई प्रकार से ज्ञानवृद्धि मिलती है। पत्रकारिता वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने मस्तिष्क में उस दुनिया के बारे में समस्त सूचनाएँ संकलित करते है जिसे हम स्वतः कभी नहीं जान सकते। पत्रकारिता का सामान्य प्रयोजन सूचना देना, शिक्षित करना और मनोरंजन करना है। किन्तु इसका विशिष्ट एवं अन्तरंग प्रयोजन लोक आराधन है। अतः सूचना प्राप्ति का सर्वोत्तम माध्यम पत्रकारिता ही है।

पत्रकारिता के इतिहास में 1920-1947 तक के काल को क्रान्तिकाल कहा गया है। यह क्रन्तिकाल हिन्दी पत्रकारिता की ओजस्विता का उल्लेखनीय युग है। इस युग के प्रेरणा पुरुष महात्मा गॉधी एक सिद्धहस्त पत्रकार थे। उनकी दृष्टि में पत्रकारिता वैचारिक क्रान्ति का एक सशक्त माध्यम थी। पत्रकारिता को विशेष रुप से हिन्दी पत्रकारिता को गॉधी के नेतृत्व में अपरिमित बल मिला। **'नवजीवन'**, **'हरिजन'**, **'यंग इंडिया'** जैसी पत्रिकाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में अपना बहुमूल्य योगदान दिया। साथ ही बाबू बालमुकुंद गुप्त जीं का **'भारतमित्र'**, **'सुधानिधि'** जैसी पत्रिकाओं ने राष्ट्रप्रेम को उजागर करते हुए लोगों के मन में स्वतंत्रता के प्रति कर्तव्योन्मुखता जगाने का सफल प्रयास किया। 1916 में मूलचंद अग्रवाल की प्रमुखता में **'विश्वमित्र'** तथा 1920 में बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने **'आज'**, **'हिन्दुस्थान'** (1932), **'नवभारत टाइम्स'** (1937), आदि पत्रिकाओं ने भारतीय जनता में परतंत्रता की बेडियों को चीरने का तथा देशप्रेम की मशाल को जलाने का सफल प्रयास किया। इसी युग में **'सरस्वती'**, **'हंस'**, **'सुधा'**, **'हिंदू पंच'**, **'विशाल-भारत'**, आदि साहित्यिक पत्रिकाओं ने भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी।

हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता के योगदान में अनेक साहित्यिक महारथियों की देन है। हिन्दी साहित्यिक प्रथम पत्रिका का उदय श्री जुगलकिशोर शुक्ल की सन 1826 ई. में **'उदंत मार्तंड'** से हुआ। उदंत मार्तंड का पहला अंक 30 मई 1826 को प्रकाशित हुआ। हिंदी का यह प्रथम समाचार पत्र केवल डेढ साल चला। लेकिन इस पत्रिका की प्रेरणा से अन्य साहित्यकारों ने हिन्दी में पत्र निकालने की प्रेरणा मिली। उनमें से कुछ प्रमुख हिन्दी साहित्यकार और उनकी पत्रिकाओं को इस प्रकार विश्लेषित किया जा सकता है।

भारतेन्दु हरिचन्द्र हिंदी के प्रमुख साहित्यकार है। बहुआयामी प्रतिभावंत, सशक्त व्यक्तिमत्व, अत्यंत बुद्धिमानी भारतेन्दु जी ने हिंदी साहित्य में अपनी अमिट छाप प्रस्तुत की है। उन्होंने हिन्दी की पत्रकारिता को एक नई समृद्धि से सम्पन्न किया था तथा उसे एक प्रशस्त मार्ग दिखाया। भारतेन्दुजी ने काशी से **'कवि वचन सुधा'** मासिक पत्रिका (1867) प्रकाशित कर हिन्दी पत्रकारिता को नई दिशा दी। इस पत्रिका में प्रारम्भ में हिन्दी साहित्यिक रचनाओं को ही प्रकाशित किया। कालान्तर इसमें राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक लेख प्रकाशित किए जाने लगे। भारतेंन्दु की सन 1873 में एक मासिक पत्रिका **'हरिश्चन्द्र मैगजीन'** का प्रकाशन प्रारंभ किया। इसमें साहित्य की विविध विधाओं का प्रकाशन हुआ करता था। यह साहित्यिक पत्रिका अपने युग की काफी लोकप्रिय पत्रिका थी। हरिश्चन्द्र जीं ने **'बालबोधिनी'** नामक पत्रिका में नारी जगत की समस्याओं को समाजोन्मुख कर दिया। अतः भारतेंदु जी ने लोकमंगल भावनाओं को जनजागृत करने का महत्वपूर्ण प्रयास किया। साथ ही भारतेंदुजी की पत्रकारिता जीवन के अंतरंग क्षणों के साथ प्रमुख रुप से साहित्यिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, नारी उद्धार तथा धार्मिक भावनाओं को संगठित कर जनजागृति का कार्य करती है।

सन 1865 में गुडियानी (हरियाणा) में जन्में बालमुकुन्द गुप्तजी ने प्रथम **'अखबारे चुनार'**, तथा **'कोहनूर'**, नामक उर्दु पत्रिकाओं का प्रकाशन किया तत्पश्चात **'भारत मित्र'**, पत्रिका के प्रधान सम्पादक बने। इस पत्रिका ने ॲग्रेजी शासन के विरोध में विद्रोह का तीक्ष्ण बाण चलाया। इस पत्रिका ने राष्ट्रीयता की आवाज को जनजागृत करने का महत्त्वपूर्ण प्रयास किया। गुप्तजी

Scanned by CamScanner

ने अपनी पैनी व्यंग्य शैली से देश की दासता का प्रखर चित्रण प्रस्तुत किया। अतः गुप्तजी अपने युग के प्रखर व्यंग्यकार, तेजस्वी, निर्भीक पत्रकार माने जाते है।

पं मनमोहन मालवीयजी ने सन 1885 में पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश कि'या। **'इण्डियन ओपिनियन'** नामक अँग्रेजी पत्रिका का सम्पादन किया। उसके बाद राजा साहब की पत्रिका **'हिन्दोस्तान'** का संपादन किया। तद्नंतर 1908 में उन्होंने क्रान्तिकारी साप्ताहिक पत्र **'अभ्युदय'** काशी से प्रारंभ किया। **'मर्यादा'** (मासिकी) तथा **'लीडर'** दैनिक पत्रों का प्रकाशन कर भारतवासियों को नई प्रेरणा देकर उनकी अँग्रेजी शासन से लुप्त भयभीत मानसिकता को नष्ट करने का प्रयास किया तथा अँग्रेजी शासन के दमन-चक्र को तोडने का सफल प्रयास किया। उन्होंने अन्य पत्रकारों को प्रेरित करते हुए कहा एक पत्रकार आदर्श मान-मर्यादा से ओत-प्रोत हो, उसमें देश प्रेम कूट कूट कर भरा हो, ताकि वह देश का मार्गदर्शन ठीक प्रकार से करे।' इन विचारों से ही मालवयीजीं ने **'हिन्दुस्तान टाईम्स'** समाचार पत्र का प्रारंभ किया। तथा उनकी इस वेजोड़ कार्यशीलता से एक ही तथ्य दर्शित होता है कि मालवीय एक सहज, सरल एवं संघर्षशील पत्रकार थे।

बाबुराव विष्णु पराडकरजीं का हिन्दी पत्रकारिता में उनका सम्पादक के रुप में हिन्दी वंगवासी (1906) के सहायक सम्पादक के पद से दुआ। तत्पश्चात **'हितवार्ता'**, **'भारत मित्र'**, पत्रिकाओं में संयुक्त सम्पादक की भूमिका निभायी। 5 सितंवर 1920 को श्री प्रकाश तथा पराडकरजी के संयुक्त संपादन में **'आज'** (काशी) का प्रकाशन हुआ। पत्रकार पराडकरजी अग्रलेख और टिप्पाणियों के लिए विख्यात थे। उनकी पत्रकारिता के तीन उद्देश्य थे - 1. अँग्रेजों के विरोध में आवाज उठाना। 2. देश की आर्थिक सामाजिक परिस्थिति में परिवर्तन लाना 3. राष्ट्रभाषा का विकास। उन्होंने एक गुप्त पत्र **'रणभेरी'** का सम्पादन और प्रकाशन किया। इसके माध्यम से अँग्रेजो की कूटनीति तथा अन्याय का पर्दाफाश किया अतः हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में पराडकरजीं का योगदान अमूल्य है।

माधवराव सप्रे जी का हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। सप्रे जी का पत्रकारिता का जीवन **'छत्तीसगढ मित्र'** से प्रारंभ हुआ। यह पत्रिका हिन्दी की एक प्रतिष्ठित निष्पक्ष समालोचना पत्रिका है। 1906 में **'हिन्दी ग्रन्थ माला'** का प्रकाशन प्रारंभ किया। इसमें देश-विदेश के महापुरुषों की जीवनी तथा राष्ट्रीय चेतना को उजागर करने का प्रयास हुआ। इसी समय सप्रे जी लोकमान्य तिलक जी के सम्पर्क में आये। लोकमान्य तिलक का नारा स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम उसे लेकर रहेगें।' यह नारा प्रत्येक भारतीयों का स्पंदन वन गया। तिलक जी ने मराठी **'केसरी'** के हिन्दी संस्करण की स्वीकृति श्री सप्रे जी को दे दी। लेकिन दुर्भाग्यवश अँग्रेजो की कूटनीति के कारण यह **'हिन्दी केसरी'** बन्द हो गया और सप्रे जी को कारावास हो गया। पर सप्रे जी ने इसे सहज स्वीकार कर संघर्षशील पत्रकार होने का परिचय दिया।

पं. माखनलाल चतुर्वेदी जीं का पत्रकार एवं साहित्यिक जीवन का प्रारंभ सन 1907 में किया। **'प्रभा'** पत्रिका के माध्यम से चतुर्वेदीजी की साहित्यिक एवं पत्रकारिता संवंधी सोच और चिन्तन के प्रसारण के लिए एक सशक्त माध्यम मिला। चतुर्वेदीजीं की ही **'कर्मवीर'**, **'प्रभा'** आदि पत्रिकाओं ने अँग्रेजो के दमन-चक्र के विरोध में विद्रोह का रूप धारण किया। इस पत्रिका में प्रकाशित देशभक्तिपूर्ण लेखों ने मध्यप्रदेश में गाँधी जी के आन्दोलन को गति देने में वडा योगदान दिया। इन पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री सर्वथा नवीन होती थी।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी वहुमुखी प्रतीभा के साहित्यकार थे। सन 1903 में द्विवेदी जीं ने **'सरस्वती'** का संपादन किया। इस पत्रिका ने हिन्दी को व्याकरण सम्मत रूप देकर भाशा की अस्थिरता को समाप्त किया। अतः द्विवेदी जीं ने भारतीय भाशाओं के वीच अन्तराल को रचनात्मक रुप से दूर करने का प्रयास किया। इसमें सभी प्राकर के राजनैतिक - सामाजिक प्रश्नों पर भी रचनाएँ छपती थी। इसका मूल स्वर साहित्यिक था परन्तु वह राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत था।

श्री गणेशशंकर विद्यार्थी ने 1913 में कानपुर से साप्ताहिक **'प्रताप'** निकाला। यह एक राष्ट्रीय पत्र था। वास्तव में हिन्दी के पत्रों और पत्रकारों में राष्ट्रीयता के सवसे अधिक प्रचार का सेहरा यदि किसी के सर वाँधा जाए तो वह होगा **'प्रताप'** और उसके अमर शहीद सम्पादक श्री गणेश शंकर विद्यार्थी। हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों के सुदुर ग्रामों की जनता तक राष्ट्रीय भावनाओं को पहुँचाना **'प्रताप'** का ही काम है।

पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जीं की **'समालोचक'** पत्रिका में साहित्यिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञनिक, सामाजिक विषयों पर लेख, हिन्दी साहित्य की आलोचना वैज्ञानिक, शैक्षिक तथा अन्य विषयों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है।

पं.वनारसीदास चतुर्वेदी ने हिन्दी पत्रकारिता को नए-नए प्रयोगों से समृद्धतर किया। उन्होंने हिन्दी साहित्य का सूक्षमता से अंकन किया। **'विशाल-भारत'** (1936), पत्रिका के द्वारा नये लेखकों को मार्गदर्पित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इस पत्रिका ने अन्य पत्र-पत्रिका के सम्मुख एक स्वस्थ आदर्श प्रस्तुत किया। **'विशाल-भारत'** के **राष्ट्रीय अंक'** तो हिन्दी साहित्य की स्थायी निधि है।

उपर्युक्त प्रमुख पत्रिकाओं के साथ ही इसी युग की कई अन्य सफल पत्रिकाओं में 'स्त्री-दर्पण', 'चाँद', 'माधुरी', 'समन्वय', 'जागरण', 'मतवाला', 'कल्याण', 'ब्राहमण', 'हिन्दुस्तान', 'कमला', 'इंन्दु', 'छत्तीसगढ मित्र' आदि नामों को जोडा जा सकता है। अतः स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता की अपनी एक अलग पहचान है। भारत को स्वतंत्रता दिलाने में इन पत्रिकाओं

Scanned by CamScanner

ने महान योगदान दिया है। जन-जन तक जागृती का संदेश दिलाने का महत्वपूर्ण कार्य इन पत्रिकाओं ने किया है। उपरोक्त पत्रिकाओं ने मिलकर भारतीय जन-मानस को प्रबुद्ध करने का अवरित प्रयत्न किया। उक्त काल की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों का सूक्ष्म लेखा-जोखा जनता के सम्मुख लाने का वास्तविक प्रयत्न किया। अँग्रेज सरकार के उत्पात और दमनचक्र का खुलकर विरोध करके साहित्यकारों ने अपनी कलम का अनोखा करिश्मा दिखाया। भाषा की सरलता, सुबोधता विषय की गहरी पकड, सामग्री चयन में लोक रुचि के साथ-साथ राष्ट्रीयता की चेतना का समावेश आदि तत्वों से यह पत्रिकाएँ हिन्दी पत्रकारिता को नई उँचाईयाँ प्रदान की। समग्रालोचन के पश्चात यही कहा जा सकता है कि इन सभी पत्रिकाओं का मूल स्वर साहित्यिक था। इनमें अधिकांश सामग्री साहित्यिक दृष्टि से उच्च कोटि की होने के साथ ही राष्ट्रीय भावभूमि पर आधारित होती थी। अँग्रेज शासन नीति का विरोध, स्वाधीनता प्राप्ति के लिए संघर्ष, लोक जागरण, लोक चेतना, इतिहास बोध और संस्कृति बोध तथा साहित्यिक प्रगल्भता आदि कई विचारों को इन पत्रिकाओं ने प्रेरित किया। अतः इन पत्रिकाओं ने स्वतंत्रता संग्राम को गति प्रदान करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

सन्दर्भ

1. डॉ. विनोद गोदरे - हिन्दी पत्रकारिता स्वरुप एवं सन्दर्भ
2. डॉ श्रीपाल शर्मा - हिन्दी पत्रकारिता : राष्ट्रीय नव उद्‌बोधन
3. संजय भानावत - पत्रकारिता के विविध परिदृष्य

Scanned by CamScanner